शब्द–ब्रह्म

भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका

ISSN 2320 – 0871

17 जून 2015

पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

तेलकटाहगाथा में तिरतन की अवधारणा

डॉ.ज्ञानादित्य शाक्य

सहायक प्रोफेसर

स्कूल आफ बुद्धिस्ट स्टडीज एण्ड सिविलाईजेशन

गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा

गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

शाक्यमुनि गौतम बुद्ध की सम्बोधि-प्राप्ति के परिणामस्वरूप ही बुद्धवचन का अस्तित्व हो सका। पालि तिपिटक साहित्य एवं पालि काव्य साहित्य का गहरा सम्बन्ध है। पालि तिपिटक साहित्य के कारण ही पालि काव्य साहित्य का आविर्भाव सम्भव हो सका है। पालि तिपिटक साहित्य की वर्ण्य-सामग्री को आधार मानकर ही विपुल पालि काव्य साहित्य का सृजन किया गया। पालि काव्य साहित्य भी पालि तिपिटक साहित्य के समान मानव जीवन के लिए अत्यधिक सार्थक सिद्ध हुआ। पालि काव्य साहित्य के अनेक ग्रन्थों में से तेलकटाहगाथा एक अद्वितीय ग्रन्थ है। आचार्य भदन्त कल्याणिय थेर द्वारा विरचित 'तेलकटाहगाथा' नामक ग्रन्थ, जिसकी रचना तेरहवीं एवं चौदहवीं शताब्दी के मध्य में की गयी है, पालि काव्य-साहित्य की एक महत्वपूर्ण काव्य-कृति है। तेलकटाहगाथा एक काव्यग्रन्थ के साथ-साथ शतक-काव्य भी है। कवि ने इस ग्रन्थ में बौद्ध धर्म के महत्वपूर्ण व जीवनोपयोगी पहलुओं का बहुत सुन्दर ढंग से वर्णन किया है। यह ग्रन्थ न केवल धार्मिक, अपितु व्यावहारिक एवं सामाजिक दृष्टि से भी एक उत्कृष्ट पालि काव्य-ग्रन्थ है। कवि ने ग्रन्थ में बुद्ध-वन्दना, धम्म-वन्दना, संघ-वन्दना एवं त्रिरत्न-वन्दना को सुन्दर तरीके से वर्णन किया है। कवि ने त्रिरत्न के प्रति अपनी असीम श्रद्धा भावना को भी अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है।

मुख्य शब्द

पालि काव्य साहित्य, पालि तिपिटक साहित्य, बुद्धवचन, शाक्यमुनि गौतम बुद्ध, महापरिनिर्वाण, आचार्य भदन्त कल्याणिय थेर, तेलकटाहगाथा, त्रिरत्न, त्रिलक्षण, शील, समाधि, प्रज्ञा, नैतिकता, दान, सदाचार, आर्य अष्टांगिक मार्ग, निर्वाण, विपस्सना, प्रतीत्य-समुत्पाद, राज-स्तुति, बुद्ध-वन्दना, धम्म-वन्दना, संघ-वन्दना, त्रिरत्न-वन्दना, लंकेश्वर के गुण, धर्माचरण, मरण-संज्ञा, अनित्य-संज्ञा, भव-अनभिरति-संज्ञा, कायविरति-संज्ञा, दुःख-संज्ञा, अशुभ-संज्ञा, अनात्म-संज्ञा, प्रतिकूल-मनस्कार, हिंसा, चोरी, व्यभिचार, झूठ, सुरापान, पाप का फल, प्रणिधि, मरणानुस्मृति, पुण्य-क्रिया, प्रतीत्य-समुत्पाद, कर्तव्य, निर्वाण, शान्तपद, परम-सुख, अमृत-पद, परमपद, बुद्धानुस्सति, धम्मानुस्सति, संघानुस्सति, आर्य पुद्गल, संघ, चार आर्यसत्य।

प्रस्तावना

यह सर्वविदित है कि पालि काव्य साहित्य की रचना का मूल आधार पालि तिपिटक साहित्य ही रहा है। पालि काव्य साहित्य की वण्र्य-सामग्री बुद्धवचन है। बुद्धवचन की विषयवस्तु के रूप में बुद्धोपदिष्ट सद्धर्म को अभिव्यक्त करने के साथ-साथ पालि काव्य साहित्य ने शाक्यमुनि गौतम बुद्ध के जीवन-चरित्र को भी काव्यात्मक शैली के

माध्यम से बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रकाशित किया है - जो पालि काव्य साहित्य की एक महत्वपूर्ण विशिष्टता है। पालि तिपिटक साहित्य में सम्बोधि-प्राप्ति से लेकर महापरिनिर्वाण तक के काल में शाक्यमुनि गौतम बुद्ध द्वारा उपदेशित व अनुमोदित वाणी को ही मूल रूप से प्रकाशित किया गया है। प्रारम्भिक काव्य साहित्य में उनके बाल्यकाल की चर्चा बहुत ही कम मात्रा में देखने को मिलती है, लेकिन आधुनिक पालि काव्य साहित्य में उनके बाल्यकाल से लेकर महापरिनिर्वाण काल तक की अवधि की घटनाओं तथा उनके द्वारा उपदेशित धर्म को बहुत ही सुन्दर व आकर्षक ढंग से प्रकाशित किया गया है। आधुनिक पालि काव्य साहित्य ने अपनी काव्य रचनाओं के माध्यम से विश्व साहित्य को अमूल्य निधि प्रदान की है। आधुनिक पालि काव्य साहित्य ने धर्म-दर्शन के साथ-साथ विश्व की सामाजिक, राजनीतिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक व साहित्यिक वातावरण को भी प्रकाशित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। इसीलिए आधुनिक पालि काव्य साहित्य सम्पूर्ण मानव जाति के लिए एक प्रेरणा-स्रोत है। इसी सन्दर्भ में आचार्य भदन्त कल्याणिय थेर द्वारा विरचित तेलकटाहगाथा**1** नामक काव्य-ग्रन्थ एक अति विशिष्ट स्थान रखता है।

आचार्य भदन्त कल्याणिय थेर द्वारा विरचित तेलकटाहगाथा नामक काव्य-ग्रन्थ पालि-काव्य साहित्य की एक अति विशिष्ट कृति है। इसकी रचना तेरहवीं शताब्दी एवं चौदहवीं शताब्दी के मध्य में की गयी है। तेलकटाहगाथा नामक ग्रन्थ बुद्धोपदिष्ट धर्म के मूलभूत तत्वों को ही प्रकाशित करता है। इसमें बुद्धोपदिष्ट सद्धर्म के आध्यात्मिक एवं व्यवहारिक दोनों ही पक्षों को प्रकाशित किया गया है। शाक्यमुनि गौतम बुद्ध द्वारा उपदेशित त्रिरत्न, त्रिलक्षण, शील, समाधि, प्रज्ञा, नैतिकता, दान, सदाचार, आर्य अष्टांगिक मार्ग, निर्वाण, विपस्सना एवं प्रतीत्य-समुत्पाद आदि धार्मिक तत्वों को ही मूलाधार बनाकर इसमें बहुत ही सुन्दर एवं आकर्षक ढंग से सौ पालि गाथाओं के माध्यम से प्रकाशित किया गया है। इसमें बुद्धोपदिष्ट धर्म एवं दर्शन को अत्यधिक सरल एवं सुबोध शैली में पाठकों एवं श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत करने की कोशिश की गयी है। अपने अनूदित ग्रन्थ की सम्पादकीय में तेलकटाहगाथा नामक ग्रन्थ की विषयवस्तु एवं गाथाओं की संख्या को अभिव्यक्त करते हुए त्रिपिटकाचार्य डॉ.भिक्षु धर्मरक्षित कहते हैं कि इस ग्रन्थ में कुल सौ गाथाएँ हैं, जो बड़ी ही रोचक तथा धर्म-रस से भरी हैं। प्रारम्भ में राज-स्तुति, बुद्ध, धम्म एवं संघ की वन्दना के बाद जो धर्मोपदेश की गाथाएँ आई हैं, वे पाठक को बरबस थोड़ी देर के लिए अपने में भुला लेती हैं।**2** इस ग्रन्थ में विद्यमान सौ पालि गाथाओं को पाठकों, श्रोताओं, जिज्ञासुओं एवं धार्मिक व्यक्तिओं के अध्ययन की सुविधा हेतु छब्बीस बिन्दुओं (शीर्षकों) के माध्यम से प्रकाशित किया जा सकता है, जो इस प्रकार हैं - राज-स्तुति, बुद्ध-वन्दना, धम्म-वन्दना, संघ-वन्दना, त्रिरत्न-वन्दना, लंकेश्वर के गुण, धर्माचरण, मरण-संज्ञा, अनित्य-संज्ञा, भव-अनभिरति-संज्ञा, कायविरति-संज्ञा, दुःख-संज्ञा, अशुभ-संज्ञा, अनात्म-संज्ञा, प्रतिकूल-मनस्कार, हिंसा, चोरी, व्यभिचार, झूठ, सुरापान, पाप का फल, प्रणिधि, मरणानुस्मृति, पुण्य-क्रिया, प्रतीत्य-समुत्पाद एवं कर्तव्य।

आचार्य भदन्त कल्याणिय थेर द्वारा विरचित तेलकटाहगाथा नामक ग्रन्थ में बुद्धवचन के गम्भीर एवं दार्शनिक तत्वों को बहुत की सुन्दर ढंग से समाविष्ट किया गया है। कवि ने सौ

गाथापदों के माध्यम से बुद्धवचन के अधिकतर पक्षों को भलीभाँति प्रकाशित किया है। कवि ने अपनी इस रचना में तिरतन (त्रिरत्न) के महत्व को बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रकाशित करने का प्रयास किया है। यह सर्वविदित है कि बौद्ध ध्यान-साधना पद्धति में बुद्धानुस्सति, धम्मानुस्सति एवं संघानुस्सति को चित्त एकाग्र करने के लिए माध्यम के रूप में प्रयोग किया जाता है। इसीलिए बुद्धोपदिष्ट सद्धर्म में बुद्धानुस्सति, धम्मानुस्सति एवं संघानुस्सति का अति महत्वपूर्ण स्थान है। कवि ने भी अपनी रचना तेलकटाहगाथा नामक ग्रन्थ में इन तीनों बिन्दुओं को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। कवि ने ग्रन्थ में बुद्ध-वन्दना, धम्म-वन्दना, संघ-वन्दना एवं त्रिरत्न-वन्दना के वर्णन के माध्यम से त्रिरत्न के प्रति असीम श्रद्धा भावना को करने का प्रयास किया है, जिसे निम्न प्रकार से समझा जा सकता है -

शाक्यमुनि गौतम बुद्ध ने बुद्धत्व प्राप्ति के बाद असीम गुणों की प्राप्ति की, जिसके कारण उन्हें गुण एवं ज्ञान का अथाह सागर कहा जाता है। शाक्यमुनि गौतम बुद्ध ने समस्त लोक के कल्याण एवं हित-सुख के लिए सत्य धर्म की देशना की। इसीलिए बुद्धोपदिष्ट सद्धर्म में शील आदिकल्याणकारी है, समाधि मध्यकल्याणकारी है और प्रज्ञा पर्यवसानकल्याणकारी है **3**, जिसके सम्यक् अनुशीलन से व्यक्ति संसार रूपी महासागर को सुखपूर्वक पार करते हुए निर्वाण रूपी शान्तपद को प्राप्त कर सकता है। शाक्यमुनि गौतम बुद्ध ने निर्वाण रूपी शान्तपद **4**, परम-सुख **5**, अमृत-पद **6** एवं परमपद के रूप में सद्धर्म की देशना की है - जो बुद्ध की असीम करुणा भावना की ही एक अभिव्यक्ति है। शाक्यमुनि गौतम बुद्ध ने बुद्धत्व-प्राप्ति से लेकर महापरिनिर्वाण के अन्तिम क्षणों तक अपने सम्पूर्ण जीवनकाल में करुणा ब्रह्मविहार भावना का अनुशीलन किया, जिससे इस लोक के प्राणिमात्र का कल्याण हुआ। समस्त प्राणियों की सुख-समृद्धि एवं विकास के लिये शाक्यमुनि गौतम बुद्ध ने अपनी असीम करुणा की बरसा की, इसीलिए शाक्यमुनि गौतम बुद्ध को महाकारुणिक कहा जाता है। **7** महाकारुणिक होने के कारण ही शाक्यमुनि गौतम बुद्ध का हृदय को करुणा से शीतल बतलाया जाता है। शाक्यमुनि गौतम बुद्ध के गुणों को अभिव्यक्त करते हुए आचार्य बुद्धघोष ने उचित ही कहा है कि -

करुणासीतलहदयं, पञ्ञापज्जोतविहतमोहतमं।
सनरामरलोकगरुं, वन्दे सुगतं गतिविमुत्तं।।**8**

अर्थात् जिनका हृदय करुणा से शीतल है, जो प्रज्ञा से आलोकित हैं, जो मोह-रूपी अन्धकार को विनष्ट कर चुके हैं, जो परिवर्तनशील नरलोक के गौरव हैं - ऐसे गति विमुक्त सुगत की वन्दना करता हूँ।।**9**

यह सर्वविदित सत्य है कि शाक्यमुनि गौतम बुद्ध ने चित्त एकाग्र करके चित्त के क्लेशों का उपशमन करने के लिए चालीस कर्मस्थानों का उपदेश किया है। इन चालीस कर्मस्थानों में से अपनी चर्या के अनुकूलित किसी एक कर्मस्थान को ग्रहण करके चित्त एकाग्र करने का अभ्यास करना चाहिए, ताकि क्लेशों का दमन हो सके। उनके द्वारा उपदेशित चालीस कर्मस्थान इस प्रकार से हैं - दस कसिण, दस अशुभ, दस अनुस्सति, चार ब्रह्मविहार, चार आरुप्य, एक संज्ञा एवं एक व्यवस्थान।**10** इन चालीस कर्मस्थानों में से दस अनुस्मृतियाँ अति महत्वपूर्ण हैं। चित्त की एकाग्रता के लिए शाक्यमुनि गौतम बुद्ध ने दस अनुस्मृतिओं को एक महत्वपूर्ण आलम्बन के रूप में माना है, जिन्हें बुद्धानुस्मृति, धर्मानुस्मृति,

संघानुस्मृति, शीलानुस्मृति, त्यागानुस्मृति, देवतानुस्मृति, मरणानुस्मृति, कायगतास्मृति, आनापानस्मृति एवं उपशमानुस्मृति के रूप में समझा जा सकता है।11 बुद्ध को लक्ष्य बनाकर उत्पन्न अनुस्मृति बुद्धानुस्मृति है। बुद्धं अनु सति बुद्धानुस्सति। अर्थात् बुद्ध के अर्हत्व आदि नौ गुणों का पुनः पुनः स्मरण करना बुद्धानुस्मृति है। बुद्धानुस्मृति को प्राप्त करने के इच्छुक साधक को यों विचार करना चाहिए कि इतिपि सो भगवा अरहं सम्मासम्बुद्धो विज्जाचरणसम्पन्नो सुगतो लोकविदू अनुत्तरो पुरिसदम्मसारथी सत्था देवमनुस्सानं बुद्धो भगवाति12 अर्थात् वह भगवान् अर्हत्, सम्यक्-सम्बुद्ध, विद्या-आचरण-युक्त, सुगति-प्राप्त, लोकवेत्ता, पुरुषों के अनुपम चाबुक सवार, देव-मनुष्य के उपदेशक बुद्ध भगवान् हैं।13 जब कोई साधक बुद्ध को अपने ध्यान का आलम्बन बनाता है, तो उसका चित्त ऋजु होने लगता है। उसके नीवरण विष्कम्भित होते हैं। इसके साथ ही बुद्ध के गुणों का अनुस्मरण एवं चिन्तन करने से विचार एवं वितर्क उत्पन्न होते हैं। बुद्धगुणों के विचार एवं वितर्क से प्रीति उत्पन्न होती है तथा प्रश्रब्धि उत्पन्न होती है, जो काया एवं चित्त को शान्त करती है। प्रशान्त भाव से सुख एवं सुख से समाधि की प्राप्ति होती है। इस प्रकार अनुक्रम से एक क्षण में ध्यान के अंग उत्पन्न होते हैं। बुद्धगुणों की गम्भीरता के कारण और नाना प्रकार के गुणों की स्मृति होने के कारण यह चित्त अर्पणा-समाधि को प्राप्त नहीं कर पाता है, अपितु केवल उपचार-समाधि की ही प्राप्ति हो पाती है। इस बुद्धानुस्मृति से अनुयुक्त साधक बुद्ध में सगौरव होता है, प्रसन्न होता है। साधक श्रद्धा, स्मृति, प्रज्ञा एवं पुण्य की विपुल को प्राप्त करता है, भय-भैरव को सहन करता है। बुद्धानुस्मृति के कारण उसका शरीर भी चैत्य-गृह के समान पूजा-योग्य होता है तथा उसका चित्त बुद्धभूमि में प्रतिष्ठित होता है।14 तेलकटाहगाथा में वर्णित गाथा संख्या दो के अन्तर्गत बुद्ध के गुणों पर प्रकाश डाला गया है। शाक्यमुनि गौतम बुद्ध में विद्यमान गुण, धर्म, करुणा एवं ज्ञान अदि महत्वपूर्ण लक्षणों को प्रकाशित करते हुए आचार्य भदन्त कल्याणिय थेर कहते हैं कि -

यो सब्बलोकमहितो करुणाधिवासो, मोक्खाकरो रविकुलम्बर पुण्ण चन्दो।
ञेय्योदधिं सुविपुलं सकलं विबुद्धो, लोकुत्तमं नमथ तं सिरसा मुनिन्दं।।15

अर्थात् जो सब लोक से पूजित हैं, जिनमें करुणा निवास करती है, जो मोक्ष (निर्वाण) के आकर (खान) हैं, जो सूर्यवंशरूपी आकाश के पूर्णचन्द्र है, जिन्होंने अति महान् समस्त ज्ञेय सागर की विशेष तौर पर जानकारी प्राप्त की है, लोक के सर्वश्रेष्ठ उन मुनीन्द्र (भगवान् बुद्ध) को सिर से नमस्कार करो।16

यह सर्वविदित सत्य है कि शाक्यमुनि गौतम बुद्ध ने सत्य धर्म के सार को निर्वाण के रूप में परिभाषित किया है। बुद्धोपदिष्ट धर्म के अनुशीलन में निर्वाण रूपी परमसुख सन्निहित है। अधर्म से व्यक्ति के जीवन में केवल दुःख ही आता है, सुख कभी नहीं। अतः पापाचरण न करने और धर्माचरण से ही व्यक्ति सुख की प्राप्ति करता है। यह धर्माचरणजन्य सुख केवल बुद्धोपदिष्ट सद्धर्म के अनुशीलन से ही प्राप्त किया जा सकता है। शाक्यमुनि गौतम बुद्ध का धर्म सुख का साधन है। शाक्यमुनि गौतम बुद्ध द्वारा उपदेशित सद्धर्म छः गुणों से परिपूर्ण है जिसके गुणों को परिभाषित करते हुए आचार्य बुद्धघोष कहते हैं कि स्वाक्खातो भगवता धम्मो सन्दिट्ठिको अकालिको एहिपस्सिको

ओपनेÕियको पच्चत्तं वेदितब्बो विञ्ञूही'ति। अर्थात् भगवान् का धर्म स्वाख्यात (भलीभाँति कहा गया) है, यहीं ओर अभी प्रत्यक्ष होने वाला, समय न लगाने वाला, आकर देखा जा सकने योग्य, आगे (निर्वाण) की ओर ले जाने वाला और विद्वानों द्वारा स्वतः जानने योग्य है।17 मानव जीवन की सार्थकता केवल भौतिक सुख-सम्पत्ति की प्राप्ति कर लेने मात्र में नहीं, अपितु आध्यात्मिक सुख रूपी उत्कृष्ट अवस्था की प्राप्ति में सन्निहित है। व्यक्ति को आध्यात्मिक सुख की प्राप्ति निरन्तर कुशलकर्मों के सम्पादन के परिणामस्वरूप होती है। भौतिक सुख-सम्पत्ति की प्राप्ति करते हुए निरन्तर आध्यात्मिकता के मार्ग पर चलने एवं विकास के लिए ही धर्म के सहारे की आवश्यकता होती है। सद्धर्म के अनुशीलन के द्वारा व्यक्ति अपने जीवन में सुख-समृद्धि की प्राप्ति करता है। व्यक्ति को संसार रूपी महासागर को पार करने के लिए ही धर्मरूपी नाव की आवश्यकता होती है। धर्म व्यक्ति को पापकर्मों से विरत रखकर पुण्यकर्मों का सुमार्ग प्रशस्त करता है। मानव जीवन की सम्पूर्णता निर्वाण रूपी अनुत्तर योगक्षेम की प्राप्ति में होती है। शाक्यमुनि गौतम बुद्ध ने निर्वाण को परमसुख की उपमा देते हुए कहा है कि निब्बाणं परमं सुखं।18 तेलकटाहगाथा में वर्णित गाथा संख्या तीन में बुद्धोपदिष्ट सद्धर्म के गुणों पर प्रकाश डाला गया है। सुगति की प्राप्ति की सीढ़ी एवं संसाररूपी भव-सागर को पार करने वाले पुल के समान इस धर्म को प्रकाशित करते हुए आचार्य भदन्त कल्याणिय थेर कहते हैं कि -

सोपानमालममलं तिदसालस्स, संसारसागर समुत्तरणाय सेतुं।
सब्बागतीभय विवज्जित खेममग्गं, धम्मं नमस्सथ मुनिना पणीतं।।19

अर्थात् देवलोक (जाने) के लिये (जो) निर्मल निसेनी (सीढ़ी) की पंक्ति के समान है, संसार-सागर पार उतरने के लिये पुल के समान है, सारे अपाय भय से रहित क्षेम मार्ग हैं, (ऐसे) मुनि (भगवान् बुद्ध) द्वारा प्रणीत धर्म का सर्वदा नमस्कार करो।20

शाक्यमुनि गौतम बुद्ध ने निर्वाण रूपी शान्तपद, परम-सुख, अमृत-पद एवं परमपद की देशना अपने सद्धर्म में की है। जो व्यक्ति बुद्धोपदिष्ट सद्धर्म का अनुशीलन करता है, वह धीरे-धीरे अपने चित्तमलों को हटाते हुए निर्मल एवं पवित्र हो जाता है। वह अनार्यजन से श्रेष्ठ पुद्गल हो जाता है। निर्वाण रूपी परमपद की प्राप्ति हेतु प्रयासरत एवं प्राप्त कर चुके आर्य पुद्गलों के समूह को संघ कहलाता है। मार्गस्थ एवं फलस्थ पुद्गल को आर्य कहते हैं।21 आर्य पुद्गलों के समूह को संघ कहते हैं। आर्य अष्टांगिक मार्ग के अनुशीलन करने वाले पुद्गलों का समूह आर्य-संघ कहलाता है। शाक्यमुनि गौतम बुद्ध के धर्म के सम्यक् अनुशीलन से जो पुद्गल आर्य बनते हैं, उनकी संख्या आठ है। इन आठ आर्य पुद्गलों से समूह को आर्य-संघ कहते हैं। आर्य-संघ में नौ पवित्र गुण विद्यमान होते हैं। संघ को परिभाषित करते हुए आचार्य बुद्धघोष कहते हैं कि सुप्पटिपन्नो भगवतो सावकसंघो, उजुप्पटिपन्नो भगवतो सावकसंघो, ञायप्पटिपन्नो भगवतो सावकसंघो, सामीचिप्पटिपन्नो भगवतो सावकसंघो, यदिदं चत्तारि पुरिसयुगानि अट्ठपुरिसपुग्गला - एस भगवतो सावकसंघो आहुणेय्यो, पाहुणेय्यो, दक्खिणेय्यो, अञ्जलिकरणीयो अनुत्तरं पुञ्ञक्खेत्तं लोकस्सा'ति।22 अर्थात् भगवान् का श्रावक संघ श्रेष्ठ मार्ग पर चल रहा है, भगवान् का श्रावक संघ सीधे मार्ग पर चल रहा है, भगवान् का श्रावक संघ न्याय मार्ग पर चल रहा

है, भगवान् का श्रावक संघ उचित मार्ग पर चल रहा है। यह जो पुरुषों के चार जोड़े (युगल) अर्थात् आठ पुरुष पुद्गल हैं - यह भगवान् का श्रावक संघ है (जो कि) आह्ननीय (आह्नान करने योग्य) है, पाहुन बनाने, दक्षिणा देने एवं प्रणाम करने योग्य है तथा लोक के लिये अनुत्तर पुण्य क्षेत्र है।23 इस प्रकार की संघानुस्मृति से साधक संघ में सगौरव होता है, अनुत्तर मार्ग की प्राप्ति में उसका चित्त दृढ़ होता है। यहाँ भी केवल उपचार-समाधि होती है। तेलकटाहगाथा में वर्णित गाथा संख्या चार में बुद्धोपदिष्ट सद्धर्म के अनुशीलन के मार्ग पर आरूढ़ आर्य-संघ के गुणों पर प्रकाश डाला गया है। विपुल फल की प्राप्ति के स्थल, बुद्ध द्वारा प्रशंसित एवं अप्रमाण्य पुण्य क्षेत्र के रूप में संघ को प्रकाशित करते हुए आचार्य भदन्त कल्याणिय थेर कहते हैं कि -

देय्यं तदप्पमपि यत्थ पसन्नचित्ता, दत्वा नरा फलमुलारतरं लभन्ते।
तं सब्बदा दसबलेनपि सुप्पसत्थं, संघं नमस्सथ सदामितपुञ्ञक्खेत्तं।।24

अर्थात् जहाँ प्रसन्न-चित्त से थोड़ा भी दान देकर आदमी विपुलतर फल पाते हैं, जो सदा दशबल द्वारा भी प्रशंसित है, उस अप्रमाण पुण्य क्षेत्र संघ को सर्वदा नमस्कार करो।25

यह सर्वविदित है कि सम्बोधि-प्राप्ति के बाद शाक्यमुनि गौतम बुद्ध ने पैंतालीस वर्षों तक अनवरत् सत्य धर्म की देशना के माध्यम से जिस सद्धर्म का उपदेश दिया - वही कालान्तर में धम्म के नाम से सम्बोधित किया गया। धम्म के मार्ग का अनुशीलन करने वाले पुद्गलों के समूह का ही संघ कहा जाता है। संसार में बुद्ध, धम्म एवं संघ की शरण ही सर्वोत्तम शरण है। बुद्ध, धम्म एवं संघ की शरण ग्रहण करने वाले प्राणी का कभी पराभव नहीं होता है, अपितु वह हमेशा ही विकास एवं सुख को ही प्राप्त करता है। शाक्यमुनि गौतम बुद्ध कहते हैं कि जो सत्व बुद्ध, धम्म, और संघ में श्रद्धा रखते हैं, उनकी कभी दुर्गति नहीं, बल्कि सदा सुगति ही होती है। त्रिरत्न के शरणागमन के महत्व को अभिव्यक्त करते हुए शाक्यमुनि गौतम बुद्ध कहते हैं कि जो साधक भगवान् बुद्ध की शरण में आ गये हैं, उनका कभी अपाय (नरक, प्रेतलोक, असुर एवं तिर्यक) योनियों में पतन नहीं होगा, अपितु वे इस मानव देहपात् के बाद देवलोक में उत्पन्न होंगें।26 उन्होंने यज्ञ, हवन, पूजा-पाठ, तीर्थ-स्थानों की यात्रा, नदी-स्नान आदि करते हुये जंगलों, पर्वतों, कन्दराओं आदि की शरण को उत्तम शरण नहीं माना है; क्योंकि इनसे व्यक्ति को परम-शान्ति की उपलब्धि नहीं हो पाती है। इस लोक में विद्यमान अनुचित शरण-स्थलों को प्रकाशित करते हुए वे कहते हैं कि मनुष्य भय के मारे पर्वत, वन, आराम, वृक्ष, चैत्य (आदि को देवता मान उसकी) शरण जाते हैं; किन्तु ये शरण मंगलदायक नहीं, ये शरण उत्तम नहीं, (क्योंकि) इन शरणों में जाकर सब दुःखों से छुटकारा नहीं मिलता।27 व्यक्ति बुद्ध, धम्म, और संघ की उत्तम शरण में आकर चार आर्यसत्यों के गम्भीर धर्म का सम्यक् अनुशीलन करने से ही संसार में व्याप्त समस्त दुःखों से मुक्ति पा लेता है। चार आर्यसत्य को उत्तम शरण बतलाते हुए वे कहते हैं कि जो बुद्ध, धर्म, और संघ की शरण गया, जो चारों आर्यसत्यों को प्रज्ञा से भली प्रकार देखता है। (वह) चार सत्य हैं - 1. दुःख, 2. दुःख की उत्पत्ति, 3. दुःख का अतिक्रमण, और 4. दुःखनाशक आर्य अष्टांगिक मार्ग - जो कि दुःख को शमन करने की ओर ले जाता है, ये हैं मंगलप्रद शरण, ये हैं उत्तम शरण, इन शरणों को

पाकर (मनुष्य) सारे दु:खों से छूट जाता है।**28** तेलकटाहगाथा में वर्णित गाथा संख्या पाँच में बुद्ध, सद्धर्म एवं आर्य-संघ के गुणों पर प्रकाश डाला गया है। आचार्य भदन्त कल्याणिय थेर ने त्रिरत्न को निर्वाण प्राप्ति के एक उपाय के रूप में परिभाषित किया है। त्रिरत्न के प्रताप से ही दु:ख-मुक्ति की उत्कृष्ट अवस्था को प्राप्त कर सकता है। संसार में सबसे बड़ा रक्षा स्थल त्रिरत्न ही है, जो न केवल मनुष्यों, अपितु प्राणिमात्र की रक्षा कर सकता है। त्रिरत्न की पूजा-अर्चना करने एवं भक्ति-भाव रखने से प्राप्त होने वाले सुखद् सुपरिणामों को प्रकाशित करते हुए आचार्य भदन्त कल्याणिय थेर कहते हैं कि -

तेजोबलेन महता रतनत्तयस्स, लोकत्तयं समधिगच्छति येन मोक्खं।
रक्खा न चत्थि च समा रतनत्तयस्स, तस्मा सदा भजथ तं रतनत्तयं भो।।**29**

अर्थात् अरे लोगों! जिस त्रिरत्न की पूजा के प्रताप से तीनों लोक मोक्ष (निर्वाण) प्राप्त करता है। जिस त्रिरत्न के समान दूसरी रक्षा नहीं है, उस त्रिरत्न को सदा सेवन करो।**30** आचार्य भदन्त कल्याणिय थेर द्वारा विरचित तेलकटाहगाथा में वर्णित सामग्री के अध्ययन के उपरान्त ऐसा कहा जा सकता है कि तेलकटाहगाथा एक ऐसा पालि काव्य-ग्रन्थ है, जो धार्मिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से अति महत्वपूर्ण है। कवि ने बुद्ध, धम्म एवं संघ (तिरतन) रूपी सद्धर्म को समाज के प्रत्येक मानव के लिए बहुत सुन्दर तरीके से अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। कवि ने बुद्ध-वन्दना में वर्णित एक गाथापद के माध्यम से शाक्यमुनि गौतम बुद्ध की धर्म-काया को प्रकाशित किया है। कवि ने धम्म-वन्दना में वर्णित एक गाथापद के माध्यम से धर्म को संसार रूपी महासागर से पार जाने के लिये पुल के समान बतलाते हुए व्यक्ति को सद्धर्म के सम्यक् अनुशीलन हेतु प्रेरित किया है। बुद्धोपदिष्ट सत्य धम्म के सम्यक् अनुशीलन के माध्यम से मानव जीवन में व्याप्त व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं का स्थायी निदान प्राप्त किया जा सकता है। कवि ने संघ-वन्दना में वर्णित एक गाथापद के माध्यम से संघ को अप्रमाण क्षेत्र बतलाया है। इसके साथ ही कवि ने त्रिरत्न-वन्दना में वर्णित एक गाथापद के माध्यम से त्रिरत्न को निर्वाण प्राप्ति का उपाय बतलाया है। इस प्रकार से धार्मिक एवं आध्यात्मिक दृष्टिकोण से वर्तमान समाज के प्रत्येक मनुष्य के लिए आचार्य भदन्त कल्याणिय थेर द्वारा विरचित तेलकटाहगाथा एक श्रेष्ठ व जीवनोपयोगी पालि काव्य-रचना है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1.प्राप्त जानकारी के अनुसार सर्वप्रथम ई.आर. गुणरत्न द्वारा रोमन लिपि में 98 गाथापदों से युक्त तेलकटाहगाथा नामक ग्रन्थ का सम्पादन किया गया। यह ग्रन्थ सन् 1884 में जर्नल आफ पालि टैक्स्ट सोसाइटी, लन्दन में प्रकाशित हुआ। इसके बाद वर्तमान समय में भारतवर्ष में इस ग्रन्थ को त्रिपिटकाचार्य डॉ.भिक्षु धर्मरक्षित ने हिन्दी भाषा में अनुवादित किया, जो मूल पालि गाथापदों के साथ देवनागरी लिपि में महाबोधि सभा, सारनाथ, वाराणसी द्वारा सन् 1948 में प्रथम बार प्रकाशित किया गया। इसके बाद महाबोधि सभा, सारनाथ से ही इसका द्वितीय संस्करण सन् 1955 में तथा तृतीय संस्करण सन् 1967 में प्रकाशित हुआ। ग्रन्थ की उपयोगिता एवं आवयश्कता को पूर्ण करने हेतु सन् 2007 में सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली ने पुनः इसे प्रकाशित किया, जो सर्वत्र आसानी से सर्वत्र प्राप्त किया जा सकता है। इसके साथ ही

तेलकटाहगाथा नामक ग्रन्थ का बंगला अनुवाद पालि व बौद्ध अध्ययन के प्रकाण्ड विद्वान प्रो. भिक्षु सत्यपाल महास्थविर द्वारा किया गया है एवं मराठी अनुवाद भिक्षु सदानन्द महास्थविर द्वारा किया गया है, जो भारतवर्ष के क्षेत्रीय भाषाओं के पाठकों के लिए अत्यधिक उपयोगी हैं। इसके साथ ही वर्तमान समय में यह ग्रन्थ सौ गाथापदों के रूप में इन्टरनेट पर ूूूण्जपचपजंांण्वतह पर भी मूल पालि गाथापदों के साथ रोमन एवं देवनागरी लिपि में उपलब्ध है जो सर्वत्र आसानी से प्राप्त किया जा सकता है।

2. तेलकटाहगाथा (अनुवादक) भिक्षु धर्मरक्षित, नई दिल्लीः सम्यक् प्रकाशन, 2007, पृ.8
3.विसुद्धिमग्गो पठमो भागो (अनुवादक एवं सम्पादक) स्वामी द्वारिकादास शास्त्री, वाराणसीः बौद्ध-भारती, 1998, पृ.15
4. खुद्दकपाठपालि (अनुवादक एवं सम्पादक) स्वामी द्वारिकादास शास्त्री, वाराणसीः बौद्ध-भारती, 2003, पृ.8
5. धम्मपद (अनुवादक) राहुल सांकृत्यायन, लखनऊः बुद्ध विहार, रिसालदार पार्क, 1986, पृ.93
6. वही, पृ.11
7. ज्ञानादित्य शाक्य, बौद्ध धर्म-दर्शन में ब्रह्मविहार-भावना, अहमदाबादः रिलायबल पब्लिशिंग हाऊस, 2013, पृ.153
8. सुमंगलविलासिनी (सीलक्खन्धवग्ग-अट्ठकथा), इगतपुरीः विपश्यना विशोधन विन्यास, 1993, पृ.1
9. ज्ञानादित्य शाक्य, बौद्ध धर्म-दर्शन में ब्रह्मविहार-भावना, वही, पृ.
10. वही, पृ.30
11. वही, पृ.32
12. सुत्तनिपात (अनुवादक) भिक्षु धर्मरक्षित, दिल्लीः मोतीलाल बनारसीदास, 2010, पृ.160
13. दीघनिकाय (अनुवादक) भिक्षु राहुल सांकृत्यायन एवं भिक्षु जगदीश काश्यप, लखनऊः भारतीय बौद्ध शिक्षा परिषद्, बुद्ध विहार, 1979, पृ.48
14. ज्ञानादित्य शाक्य, बौद्ध धर्म-दर्शन में ब्रह्मविहार-भावना, वही, पृ.33
15. तेलकटाहगाथा, वही, पृ.11
16. वही
17. विसुद्धिमग्गो पठमो भागो, वही, पृ.27
18. धम्मपद, वही, पृ.93
19. तेलकटाहगाथा, वही, पृ.12
20. वही
21. अभिधम्मत्थसंगहो दुतियो भागो (अनुवादक एवं सम्पादक) भदन्त रेवतधम्म एवं रामशंकर त्रिपाठी, वाराणसीः सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, 1991, पृ.875
22. विसुद्धिमग्गो पठमो भागो, वही, पृ.36
23. ज्ञानादित्य शाक्य, बौद्ध धर्म-दर्शन में ब्रह्मविहार-भावना, वही, पृ.39
24. तेलकटाहगाथा, वही, पृ.12
25. वही
26. ये केचि बुद्धं सरणं गतासे, न ते गमिस्सन्ति अपायभूमिं। पहाय मानुसं देहं, देवकायं परिपूरेस्सन्ती'ति।। संयुत्तनिकायपालि पठमो भागो (अनुवादक एवं सम्पादक) स्वामी द्वारिकादास शास्त्री, वाराणसीः बौद्ध-भारती, 2000, पृ.45
27. बहुं वे सरणं यन्ति पब्बतानि वनानि च। आरामरुक्खचेत्यानि मनुस्सा भयतज्जिता।
नेतं खो सरणं खेमं नेतं सरणमुत्तमं। नेतं सरणमागम्म सब्बदुक्खा पमुच्चति।। धम्मपद, वही, पृ.86
28. यो च बुद्धञ्च धम्मञ्च संघञ्च सरणं गतो। चत्तारि अरियसच्चानि सम्मप्पञ्ञाय पस्सति।।

दुक्खं दुक्खसमुप्पादं दुक्खस्स च अतिक्कमं।
अरियञ्च अट्ठंंगिकं मग्गं दुक्खूपसमगामिनं।।
एतं खो सरणं खेमं एतं सरणमुत्तमं। एतं
सरणमागम्म सब्बदुक्खा पमुच्चति।। धम्मपद,
वही, पृ.86

29. तेलकटाहगाथा, वही, पृ.12

30. वही, पृ.13